Volume: 5 Issue: 2 Pages: 63-65

शिक्षक के शिक्षण अभिक्षमता का छात्रों के अध्ययन आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

[*1] जगदीश कुमार

[*1] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या महाविद्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 10/Jan/2026
Accepted: 10/Feb/2026

***Corresponding Author**
जगदीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या महाविद्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
आदत और व्यवहार मानव जीवन में के लिए नितांत आवश्यक है। आदत, व्यवहार, उत्तम कार्य चरित्र के स्वरूप का निर्धारण करते हैं शिक्षा आदत, व्यवहार में शोधन कार्य करती है। शिक्षक की शिक्षण अभिक्षमता शिक्षार्थी के अंदर शोधन आदतो का निरूपण करती है इस प्रकार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो बालक में वांछनीयता लाती है। शिक्षण अभिक्षमता बालक के अंदर एक आदर्श आदत, आदर्श व्यवहार एवं लक्ष्य,शैली,पद्धति,प्रयोजन का सृजन करते हैं। अधिगम को रुचिकर प्रभावशाली,सार्थकता चिरस्थाई बनाने में अध्ययन आदत की भूमिका निर्णायक रहती है।

मुख्य शब्द: आदत, अध्ययन आदत, शिक्षण, शिक्षण अभिक्षमता, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय।

प्रस्तावना:

छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए एवम् शैक्षिक निष्पति के उत्तम परिणाम के लिए छात्रों के अंदर अध्ययन आदतो का विकास विशेष महत्व प्रदान करता है। छात्रों में अध्ययन आदते, छात्रों के अंदर असीमित ऊर्जा प्रदान करती है और अन्य सभी क्षेत्र में अभिरुचि पैदा करती है। शिक्षण अभिक्षमता शिक्षण प्रक्रिया का आधारभूत स्तंभ है इसका प्रभाव छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्तरोत्तर दिशा प्रदान करता है।

अध्ययन आदत

अध्ययन आदतें अथवा सीखने की आदतें नियमित रना ब्रेक लेना और अध्ययन सूत्रण के लिए लक्ष्य निर्धारित करना शामिल है।इसमें अध्ययन के लिए एक उपयुक्त स्थान खोजना विकर्षण, को कम करना, युक्तियो को अपनाना तथा रणनीतियां विकसित हो जाती

शिक्षण अभिक्षमता

अध्ययन अध्यापन एवं शिक्षण कार्य में दिलचस्पी रखना, रुचि रखना और शिक्षण स्तर के अनुरूप क्षमता, ज्ञान, कौशल, धैर्य तथा सृजनात्मकता योग्यता को धारण करना शैक्षिक अभिक्षमता है।

शिक्षक अभिक्षमता के विशेष अर्थ में शिक्षण कार्य और शिक्षक सिद्धांत तथा उसमें अपनी जाने वाली प्रविधियां के विन्यास में रुचि और योग्यता रखने से है। शिक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिकता के साथ-साथ कल भी समावेशित रहती है। शिक्षक एक कार्यप्रणाली है जो सामाजिक और भौतिक वातावरण के अनुकूल प्रशिक्षित को अपने ज्ञान से सृजित करता है। शिक्षण छात्रों एवं अध्यापक के मध्य पारस्परिक अंतः क्रिया है छात्र एवं अध्यापक के मध्य यह पारस्परिक क्रिया विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास में सहायक होती है इससे छात्रों के अंदर से कई सदगुण, सद व्यवहार तथा सरोकारित आदतें भी जन्म लेती हैं जिनमें एक अध्ययन आदत भी है।

शिक्षण का अर्थ

मॉरिसन: के अनुसार - शिक्षण अधिक परिपक्व व्यक्तित्व और कम परिपक्व व्यक्तित्व के बीच एक आत्मिक घनिष्ठ / संपर्क की पारस्परिक क्रिया है जिसमें कम परिपक्व को शिक्षा की दिशा की ओर अग्रसरित किया जाता है।

स्किनर: के अनुसार - शिक्षण पुनर्वलन का क्रम है।

The Little Oxford Dictionary के अनुसार-ज्ञान प्रदान करना, कौशल का विकास, पाठ पढ़ाना, उन्हें उत्साहित करना शिक्षण का कार्य है।

1. शिक्षण दूसरे को ज्ञान कौशल और मूल्य प्रदान करने की प्रक्रिया है जिसने प्राप्तकर्ता को प्रदाता अपना ज्ञान प्रेषित करता है।
2. सीखने सिखाने और समझने की सुविधा के लिए जानकारी और विचारों को साझा करना शिक्षण है।

शिक्षण के प्रमुख सूत्र

1. अधिगम प्रक्रिया को शुग़म एवं सार्थक बनाने के लिए शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को अज्ञाता का पता लगाने के लिए पूर्व ज्ञान से नवीन ज्ञान की तरफ से आगे बढ़ना चाहिए।
2. शिक्षण प्रक्रिया में अधिगम को सरल बनाने के लिए सरलता से कठिनता की ओर बढ़ाना चाहिए।
3. अधिगम प्रक्रिया में अमूर्त भ्रमित अवस्था है इसलिए शिक्षण प्रक्रिया में मूर्त से अमूर्त की ओर बढ़ाना चाहिए।
4. अधिगम में जो उद्देश्य प्राप्त हो गए हैं पूर्ण हैं और जो प्राप्त करना है अंश है। शिक्षण को सार्थक बनाने के लिए संपूर्णता से से अंश की ओर बढ़ाना चाहिए।
5. संश्लेषण से विश्लेषण की ओर शिक्षण शुरू करना चाहिए।
6. आगमन ज्ञान की खोज का तरीका है और निगमन ऐसे खोजने का परिणाम है इसलिए आगमन से निगमन की ओर शिक्षण प्रक्रिया शुरू करनी चाहिए।
7. शिक्षण प्रक्रिया में हमेशा विशेष से सामान की खोज के लिए कार्य करना चाहिए।

शिक्षण अधिगम सामग्री

शिक्षण अभिक्षमता को विशिष्टता,आकर्षण एवम् सार्थकता प्रदान करने के लिए संबंधित शिक्षण सामग्री को अपनाना उचित रहता है।

1. वास्तविक शिक्षण सामग्री - मानचित्र ग्लोब चार्ट स्केल पैमाने वाले टेप आदि विज्ञान मॉडल।
2. श्रव्य सहायक सामग्री – रेडियो,टेपरिकॉर्डर, वी. सी. आर. सी डी प्लेयर आदि।
3. दृश्य सहायक सामग्री ब्लैक बोर्ड,चार्ट,चित्र, मॉडल, स्ट्रिप, स्लाइड आदि।
4. दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री कंप्यूटर, फिल्म, मोबाइल लैपटॉप डेस्कटॉप आदि।
5. प्रशिक्षित सहायक सामग्री चलचित्र, प्रोजेक्टर, मैजिक लालटेन, ओवरहेड प्रोजेक्टर आदि।
6. अपेक्षित सहायक सामग्री चाक, बोर्ड, बुलेटिनबोर्ड, फोटोग्राफ, पाठयपुस्तक आदि।

शिक्षण विधियां शिक्षक की प्रमुख विधियां

- आगमनात्मक विधि
- निगमानात्मक विधि
- प्रश्नोत्तर विधि
- समस्या समाधान विधि
- परियोजना विधि
- चर्चा विधि
- प्रदर्शन विधी
- खेल विधि
- मांटेसरी पद्धति
- रोल प्ले विधि।

शोधन कार्य का औचित्य

मानव का जीवन आदतों से भरा पड़ा है जो व्यक्ति जन्म से लेकर ही पैदा हुआ है कुछ आदतें सामाजिक परिवेश में परिवार स्कूल खेल आजगतिविधियों और अभ्यास से है जो प्रभावी शिक्षण को बढ़ावा देती है हैं और कुछ आदतें बढ़ती हुई उम्र के साथ अनुभवों के अनुसार परिवर्तित होती रहती हैं। आदतों का संगठन आत्मक रूप ही व्यक्ति को विशिष्ट बनाता है इसके संघटनात्मक रूप से व्यवहार,चरित्र, नैतिकता के स्वरूप का निर्माण होता है। इस प्रकार से आदत व्यवहार चरित्र मानव जीवन का प्रमुख आधार है इन आधारों के संवर्धन,मार्गांतरीकरण के अभाव में मनुष्य पशुओं की श्रेणी में आ जाता है। शिक्षण प्रक्रिया में छात्रों के अधिगम और स्मृति स्तर को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए अध्ययन आदतों का विकास मुख्य है। इसलिए अध्ययन आदतों के विकास के लिए समाज को तत्पर रहना चाहिए तथा प्रत्येक शिक्षक को अपनी शैक्षिक प्रवृत्ति को अपनी उच्चतम प्रकाष्ठा पर रखनी चाहिए। शोधकर्ता द्वारा इस समस्या को अपने शोध कार्य में जगह दी गई है। शिक्षक के शिक्षण अभिक्षमता और उसके छात्रों के अध्ययन आदतों के बीच के संबंध को स्पष्ट रूप से समझने तथा पढ़ने वाले प्रभावों का समीक्षात्मक वर्णनात्मक रूप से अध्ययन किया जाएगा।

शोध समस्या

"शिक्षक के शिक्षण अभिक्षमता क्षमता का छात्रों के अध्ययन आदत पर पढ़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

उद्देश्य

1. वित्त पोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत विद्यार्थियों पर शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन आदत पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. स्व वित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत विद्यार्थियों पर शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन आदत पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. वित्त पोषित तथा स्व वित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत विद्यार्थियों पर शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन आदत पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. वित्त पोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत विद्यार्थियों पर शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन आदत पर कोई अर्थ पूर्ण अंतर नहीं है
2. स्व वित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्यनरत विद्यार्थियों पर शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन आदत पर कोई अर्थ पूर्ण अंतर नहीं है।
3. वित्त पोषित और स्व वित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों पर शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन आदत पर कोई अर्थ पूर्ण अंतर नहीं है।

शोध कार्य में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय: कक्षा 11से12 तक के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थान।

शिक्षण अभिक्षमता: शिक्षण अभिक्षमता का सामान्य अर्थ एक व्यक्ति की वह क्षमता जो प्रभावी ढंग से पढ़ाने और छात्रों को सीखने में मदद करने में सक्षम बनाती है। इसमें मुख्य पहलू विषय वस्तु का ज्ञान,शिक्षण कौशल,छात्रों प्रेरित करना,कक्षा का अनुगम्य वातावरण तैयार करना, शिक्षण प्रदर्शन, छात्र प्रक्रिया तथा मूल्यांकन है।

अध्ययन आदत: अध्ययन की आदते उन व्यवहारो को रेखांकित करती है जिन्हें छात्र अध्ययन करते समय अपनाते हैं जिसमें समय प्रबंधन, नोट्स लेने के तरीके, एकाग्रता का संचयन और रणनीतिया हैं।

अनुप्रयोग में लाए गए उपकरण

1. एम. मुखोपाध्याय तथा डी. एन. संसवाल द्वारा निर्मित study Habit inventory अध्ययन आदत सूची।

2. जयप्रकाश तथा आर. पी. द्वारा रचित Teaching Aptitude Test शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण।

प्रयुक्त सांख्यिकी

शोध में प्रयुक्त विधि प्रस्तुत शोधन कार्य में सर्वेक्षण शोध का चयन किया गया है।

जनसंख्या (समष्टि) जनसंख्या के रूप में हाथरस जनपद के दो वित्त पोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और दो स्व वित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र/छात्रों को लिया गया है ।

1 स्ववित्त पोषित विद्यालय

स्ववित्त पोषित विद्यालय	छात्र/छात्राओं की संख्या
किन्हीं सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कैमार हाथरस।	20
महात्मा गांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हाथरस	20
विद्यालय संख्या 02	कुल छात्र संख्या 40

2 वित्त पोषित विद्यालय

वित्त पोषित विद्यालय	छात्र/छात्राओं की संख्या
सरस्वती इंटर कॉलेज हाथरस।	20
जवाहर इंटर कॉलेज मीतई हाथरस।	20
विद्यालय संख्या 02	कुल छात्र संख्या 40

इस जनसंख्या समष्टि के रूप में स्व वित्तपोषित विद्यालय के 40 तथा वित्त पोषित विद्यालय के 40 छात्र/छात्राओं को तथा कुल सकल रूप में 80 छात्र छात्राओं सम्मिलित किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी

शोध कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाली प्रविधियां एवम् सांख्यिकी में समांतर माध्य, मानक विचलन और मध्यमानो में सार्थक अंतर प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों एवम् कार्यों का विश्लेषण

तालिका 1: स्व वित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

तुल्य समूह	न्यादर्श	मध्यान	मानक विचलन	टी -मान
1 किन्हीं सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कैमार हाथरस।	40	139.00	15.6	0.04
2,महात्मा गांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हाथरस 50	40	138.85	5.58	

शोध कार्य के तालिका 2 में स्व वित्तपोषित पोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किन्हीं सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कैमार हाथरस छात्र छात्राओं में मध्यमान 139.00 तथा मानक विचलन 15.6 और टी मान 0.04 है, इसी प्रकार से महात्मा गांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हाथरस के छात्र छात्राओं में मध्यमान 138.85 तथा मानक विचलन 5.58 और टी मान 0.04 है।

तालिका 2: वित्त पोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

तुल्य समूह	न्यादर्श	माध्य मान	मानक विचलन	टी -मान
1 सरस्वती इंटर कॉलेज हाथरस।	40	148.85	15.46	1.84
2 जनता इंटर कॉलेज मीतई हाथरस।	40	140.05	8.72	

इस आंकड़ों के विश्लेषण की तालिका 2 में वित्त पोषित उच्चतर माध्यमिक के सरस्वती इंटर कॉलेज हाथरस के छात्र छात्राओं का मध्य मान 148.85 एवम् मानक विचलन 15.46 और टी – मान 1.84 है।इसी प्रकार से जनता इंटर कॉलेज मीतई हाथरस के विद्यार्थियों की मध्य मान 140.05 और मानक विचलन 8.72 एवम् टी मान 1.84 है।

तालिका 3: वित पोषित एवम् स्व वित्तपोषित विद्यालय

तुल्य समूह	न्यादर्श	मध्य मान	मानक विचलन	टी -मान
1 वित्त पोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय।	40+40=80	142.24	15.34	07.6
2 स्व वित्त पोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	40+40=80	138.82	7.36	

आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त इस तालिका 3 में वित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की मध्यमान 142.24 तथा मानक विचलन 15.34 है और टी – मान 07.6 है। स्ववित्त पोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत विद्यार्थियों का मध्य मान 138.82 मानक विचलन 7.36 और टी – मान

सन्दर्भ सूची:

1. पाण्डेय के.पी.**मनोविज्ञान और शिक्षा मंत्री सांख्यिकी**निनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
2. गुप्ता एस पी**आधुनिक मापन और मूल्यांकन **शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
3. शर्मा आर ए**शिक्षा अनुसंधान**आर लाल बुक डिपो मेरठ।
4. कपिल एच के **सांख्यिकी के मूल तत्व**अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
5. दुबे प्रो0 एल एन & बरोदे प्रो0 बी आर**शिक्षा मनोविज्ञान** आरोही प्रकाशन, साउथ सिविल लाइन जबलपुर।
6. सिंह गया**शैक्षिक अनुसन्धान की विधियां**आर लाल बुक डिपो मेरठ
7. गुप्ता एस पी & गुप्ता अलका**उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार**शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद ।
8. भटनागर आर पी, भटनागर ए बी, भटनागर अनुराग** शिक्षा अनुसंधान प्रक्रिया, प्रकार एवम् सांख्यिकीय आधार आर लाल बुक डिपो मेरठ।
9. सिंह बघेल 2017 किशोरावस्था के विद्यार्थी में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।